नवरंग भाव

(कविता संग्रह)

मोहित मिश्रा

1.मेरे प्यार से

ये मोती हैं कोई अश्क़ नहीं,

ऐसे न बिखरने दो इनको,

नयन सिंधु के तटबंधों में,

हँस के निखरने दो इनको,

ये कमल पत्र के हिम-बूँद,

शीतल ही अच्छे लगते,

तेरे दृग तो मन-मीत मेरे ,

बिन छलके ही सच्चे लगते,

हम लौ-दीपक से साथ रहें-

या अमिट प्यास की बनें कहानी,

तुम रहना अल्हड़ नदियों सी,

हाँ, लाना ना आँखो में पानी,

क्या हुवा समय के ताल-छंद-

जो रास हमें ना आ पाए ?

क्या हुवा तुम्हारे दर तक जो-

हम डोली ले ना जा पाये?

हृदय-पृष्ठ पर साँसों से-

प्रणय-पूर्ण अनुबंध है जो,

मोहन से राधे के जैसा-

तेरा मेरा संबंध है जो,

है बहुत जन्म भर ख़ुश रहने को -

क्यों मोह अधिक का करती हो ?

बोलो प्रियवर क्या बह जाने को -

मुझको नयनों में भरती हो?

2.तुम मिले थे ...

तुम मिले थे ...

अनजान गलियों के एक मोड़ पर,

मोहब्बत नहीं, तकरार के साये में,

विचार जुदा थे, संसार जुदा थे,

हमारे अपने अपने प्यार जुदा थे,

तुम फूल की पक्षधर, अपने स्वभाव जैसी,

मैं पत्थर का समर्थक, भाव के अभाव जैसा,

परंतु फिर भी मैं तुम्हारे साथ चला,

ले हाथों में हौले से तेरा हाथ चला,

तब तो नहीं टोका तुमने?

मेरे क़दमों को नहीं रोका तुमने?

आज हक़ जताने पर गुस्सा हो?-मत करो।

क्योंकि जिस तरह तुम्हारे आने की ख़बर नहीं थी,

जाने की भी शायद हो न हो ,

फिर ये प्यार की क़वायद हो न हो।

जब किसी मोड़ पर फिर जुदा हो जाएँगे ,

जब चाहकर भी तुम्हारी बाहों में आ न पाएँगे ,

तब ना होगी साँसों की महक तुमपर,

तब नहीं जताएँगे कभी हक़ तुमपर,

पर ज़रा अपने दिल से पूछो-

क्या तड़प नहीं जाओगे उन पलों की याद में,

जब मैं अधिकार से तुमको अपना कहता था,

तेरे होंठों पर हक़ जताकर अपने होंठ रखता था,

तब जो तड़प हमारे दिल में होगी-

ख़ंजर का घाव उतना दर्द क्या देगा?

3.महादेव प्राथना

गौरी-पति नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं ब्याघ्रांबरः।

षडानन पितृ नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं शिव-शङ्करः।।

नमस्तुभ्यं महाकाले ,विष्णु-वल्लभ ,महेश्वरे।

नमस्तुभ्यं वृषभारूढ़ा, महादेवा हरे-हरे ।

नमस्तुभ्यं त्रिलोकेश, कैलाशवासी, अनीश्वर।

नमस्तुभ्यं त्रयीमूर्ति, सर्वज्ञ-ज्ञानी, गिरीश्वर।

नमामि भुजंगभूषण, नमामि त्वं प्रजापति।

नमामि पंचवक्त्र, नमामि त्वं पुराराती।

नमामि भर्ग-हिरण्यरेता, नमामि परमात्मने।

कोटिशः नमस्तुभ्यं मृत्यु-पाश-विमोचने ।।

4.पिता..

पिता..

हमारी सारी दुशवारियों पर -

अपना सुख-दुःख न्योछावर कर,

वट-वृक्ष की छाया सा सदा निर्मल ,

है जलाता स्वयं को तिल-तिल,

हमारी हैसियत से ऊँची उड़ान के लिए ,

बेघर सपनों के एक मकान के लिए,

जिसकी डाँटों और गुस्से ने

हमें तराश कर लायक बनाया,

स्वयं की नज़रों में नायक बनाया,

उस पिता की एक छोटी सी इच्छा -

की तन- थके बाल-पके तो रहे,

पुत्र के पास, पौत्रों से मिल खेलते हुए,

थक चुकी आँतों को दो रोटियाँ-

और थोड़े से दूध की ज़रूरत ही तो होती हैं।

मगर हम! जिसे उसी पिता ने लायक बनाया होगा,

नहीं उठा पाते बोझ उन दो रोटियों का-

जो कभी पिता ने ख़ुद ना खाकर हमें खिलाया होगा,

पर ज़रा सा रुककर यह सोचना-

कल तुम भी तो पिता होगे?

वृद्धाश्रम तब तक बंद नहीं हो जाएँगे।

5.हिमगिरि की आँखे नम हैं

हिमगिरि की आँखे नम हैं|

पुनः कुठाराघात सह रहीं,

माँ भारती कुछ वर्षों से।

पीड़ादायी दंश दे रहे ,

नवल विषधर कुछ अरसों से।

फण पर फणधर के नर्तन को,

हलधर के भाई कम हैं।

हिमगिरि की आँखे नम हैं|

संस्कृतियों की प्राचीन धरा पर,

देख राजनीति का अंधपतन।

सोच दुर्दशा आम जन-जन की ,

ब्याकुल-ब्यथित-द्रवित है मन।

मोहित अर्जुन को समझाने को ,

गीता की वाणी कम है।

हिमगिरि की आंखे नम है।

सूर्य भारत भू के जो हैं,

अस्ताचल को अग्रसर हैं,

गहन तम के नए प्रवर्तक ,

निष्कंटक प्रभावान प्रखर हैं।

दमन शोषण के दो पाटों में

पिसती जनता की चीख़ें कम हैं?

हिमगिरी की आँखे नम हैं।

6.ग़ज़ल

अभी भी तुमसे मिलने के कई अरमान बाक़ी हैं,

मेरी समृद्धियों के अब तलक निशान बाक़ी हैं,

मैं नंगे पैर शोलों पर अभी भी चल रहा लेकिन ,

मेरे पाँवो के छाले में हलक तक जान बाक़ी है,

गले में फँस गयीं हैं रस्सियाँ फाँसी के फंदे की,

मगर ज़िन्दा हूँ क्योंकि मौत का फ़र्मान बाक़ी है,

फ़क़त कुछ धूप से माना कि मैं सूखता समंदर हूँ,

मगर अश्कों की बूँदों में बहुत अहज़ान बाक़ी हैं,

भले ही ख़ाक में मिलने लगा है अाशियां मेरा ,

मगर इस खंडहर में अब तलक गुमान बाक़ी है,

7.अब मिटा दो पास आओ

कह रही है दिल की धड़कन, कुछ दिनों से दूर हो तुम,

आह सांसों की, तड़प की, अब मिटा दो पास आओ.

यह अकेलापन मुझे अब काटने को दौड़ता है ,

तन्हा पल की इस चुभन को अब मिटा दो पास आओ.

आलिंगनों के द्वार तुमसे ,कह रहे हैं खोल बाहें,

फूल के श्रृंगार जैसे गोद मेरी तुम सजा दो ,

आंख के अरमान तुमसे कह रहे हैं इंगितों से ,

देख लो तिरछी नजर से औ जरा सा तुम लजा दो ,

होठ जो प्यासे हैं अबतक बोलते हैं सुन लो सजनी ,

तुम जरा सा होठ अपने मेरे होठों से लगा दो ,

है नहीं अब कट रहीं ये शून्य सी, स्याही सी रातें ,

प्रेम-रश्मि से निशा को अब मिटा दो पास आओ.

कह रही है दिल की धड़कन, कुछ दिनों से दूर हो तुम,

आह सांसों की, तड़प की, अब मिटा दो पास आओ.

8.भला कैसे(अतुकांत)

दूर क्षितिज में-

तुम्हारे अधर की ज्यों रंगत चुराकर -

प्राची के प्रान्त पर रक्तिम सी आभा,

हो बिखरने को आकुल तभी मीत मेरे,

मुझे चूमकर तुम जगाने लगो ,

कहो कैसे गाऊँ शुभाषित सुबह के !

प्रणय-छंद ना फिर उच्चारा करूं।

शशि मुख पर-

छिटक आये केश-वेणी से खुल-

प्यारे लट को झटककर झुंझलाती तुम,

हस्त-व्यस्त हों कहीं, होके लाचार सी ,

तुम पुकारो मुझे जब बड़े प्यार से ,

मैं भला कैसे उन्माद से छूट कर ,

रुक जाऊं! तुम्हे ना सताया करूं।

ऐ मेरी-

वर्षा की प्रथम फुहारों से उपजी -

हरे दूब की चादर सी मुलायम परी ,

जब तुम स्निग्ध मुस्कान अधर पर लिए,

मासूम बच्चे सी निर्द्वंद सोती रहो ,

मैं भला कैसे तृष्णा से विमुक्त हो-

सो जाऊँ! तुम्हें न निहारा करूँ।

9.जो तुम मुझमे घुल-घुल जाते

जो तुम मुझमे घुल-घुल जाते।

आंखे गातीं अनुराग राग ,

जी से मिट जाता विराग ,

उन्माद भरे किसलय दोनों ,

अधरों पर ढुल-ढुल जाते ,

जो तुम मुझमे घुल-घुल जाते।

अनुकंपित होता प्राण सखी ,

स्पंदन युत निर्वाण सखी ,

विप्लव, विषाद सूनी रातें ,

सब लम्हों में धुल-धुल जाते ,

जो तुम मुझमे घुल-घुल जाते।

मदमाते पुष्प नवीन विशद ,

उमड़ा आता मधुभावित नद ,

पलकों के अज्ञात-ज्ञात ,

अवगुंठन सब खुल-खुल जाते,

जो तुम मुझमे घुल-घुल जाते।

10.वियोग (कविता)

नीरव निशा, निःशब्द दिशा में ,

तारे-विहीन अंबर के निचे ,

प्रेम-अनल की हिमशिखा से,

जल-जल अपना अंतस सींचे।

मर्म लक्ष्य कर व्यंग विशिख को ,

निष्ठुर ने ब्याल सरीखे छोडे ,

मैं विकल तड़पता रहा अकिंचन ,

सहला-सहला दिल के फोड़े।

दृग में आँसू की माला टूटी ,

बिखरे मुक्ताहल गालों पर ,

ब्यथा-उर्मि करुणा-सिंधु की ,

देती दस्तक उर-छालों पर |

एक शून्य उतर सा आया ,

इस जीवन के आंगन में ,

और पर्व मना है इसका ,

किसी निर्दय के प्रांगण में।

तड़ित गिरा ज्यों मन पर ,

बोले जब वचन कँटीले ,

अनुमान नहीं था होंगे ,

प्रियवर कुछ ऐसे हठीले।

एकाकी पथिक था जबतक,

सुने थे नयन अभागे ,

अनुबंध हुआ जब प्रिय से ,

कुछ स्वप्न मचल कर जागे।

11.सीता वनवास (प्रथम भाग):-1 (छंदमुक्त)

लौटे राघव, जनपद भ्रमण कर, हतोत्साहित उदास ,

स्कंध निचे, द्रवित ह्रदय, उद्वेलित मन, कम्पित श्वास,

चिंतित मन, बार-बार करते ह्रदय कठोर,

पर कानों में पुनः-पुनः गुञ्जित होता वहीं शोर,

हाय निष्कपट प्रजा यह, पर बुद्धिहीन ,

अंतः विषाद से हो उठा श्याम-मुख-मलिन,

यह कैसा विकट शत्रु बन खड़ा राजधर्म ,

प्रजा बेध रही ब्यंग-विशिख से राम मर्म ,

और राम ! प्रत्युत्तर में विकल, ठगे से मौन ,

सोच रहे मुझसे हतभागा है धरा पर कौन?

हाय माता का ही नहीं रहा मुझपर विश्वास ,

राजकुल में जन्म लिया और सहा वनवास ,

पर यहीं निवर्तित नहीं हुई, मेरी ब्यथा, ओह!

विषम वन में झेला मैंने प्राण-प्रिया-विछोह।

और भी कितने कष्ट सहे भला किसके हित?

सोच-सोच रघुकुल-भूषण होते चिंतित ,

आ गया रनिवास पर खिन्नचित स्मित-आनन,

देखा जनक-तनया ने श्रीराम का ब्याकुल मन,

बोलीं! क्यों विपर्यस्त है श्वास? क्या विषाद ?

धैर्याम्बुधि में अशांत हलचल, यह अपवाद?

कुछ कहने को आतुर अधर, पर बरबस शांत,

ज्यों कंठ हलाहल रोक रखे हों उमाकांत ,

हतप्रभ खड़ी सिय, राम-मौन, निःशब्द वातावरण,

केवल रहा पल-प्रतिपल चढ़ता निशा-आवरण ,

पर नहीं थम सका अंततः हृदय-ब्यथा-प्रवाह,

विवश होकर निकला राम के मुख से, आह !

कुछ अनिश्चित से जानकी को देखते अपलक ,

स्वयं से ही बोल उठे, हाय जनता का शक।

कैसा शक? सीता ने श्रीराम से पूछा तक्षण ,

पुनः स्तब्धता छायी रही दोनों मध्य कुछ क्षण,

स्पंदित हुए अधर, स्वर स्नेहासक्ति से पूर्ण,

बोले राघव, प्रिये प्रश्न को, रह जाने दो अपूर्ण ,

यह नहीं मात्र जिज्ञासा जो उत्तर का अभिलाषी ,

यह विकट काल का दंड जड़-निष्ठुर विनाशी | क्रमश:

12.होली और यादें

फिर से होली आ गयी है ,

यादें मन में छा गयीं हैं ,

यादों का है क्या ठिकाना ,

इनका तो है आना जाना।

पर वो होली और थी जब ,

घर की घर में साथ थे सब ,

माँ के हाथों की मिठाई ,

मानो अमृत में डुबाई।

पिताजी का प्यार देना,

स्नेह से यूँ निहार देना ,

उनकी आँखों का मैं तारा ,

उनके प्राणों का सहारा।

आज घर से दूर हूँ मैं ,

दूर क्या मजबूर हूँ मैं ,

रंग होली के मुझे अब,

चुभते हैं काँटों से सब।

फिर से होली आ गयी है ,

यादें मन में छा गयीं हैं,

नींद से उनको जगाकर ,

रंग पापा को लगाकर।

माँ ने गुझिया छाने होंगे ,

और भी पकवाने होंगे ,

पर ख़ुशी होगी कहाँ से ,

मैं नहीं जो हूँ वहाँ पे।

पिताजी खाने बैठे होंगे ,

दिल तो उनके ऐंठे होंगे ,

मेरा प्यारा मालपुआ होगा ,

देखकर उनका मन चुआ होगा।

माँ भी रुंधे कंठ भरकर ,

बोली होंगी कुछ संभलकर ,

पानी क्यों आँखों में आये ?

जो की तुमने अब बहाये।

पिताजी फिर बोले होंगे ,

बोले क्या मन खोले होंगे ,

वह अगर जो साथ होता,

घर का मनो माथ होता।

तुमसे कहता ये बना माँ ,

तुमसे कहता वो बना माँ ,

तुम भी उसकी वाली करती ,

मेरी बातें पीछे धरती।

हाँ उमंगित मैं भी होता ,

हाँ तरंगित मैं भी होता ,

इसलिए आंखे भर आयीं ,

क्योंकि उसकी याद आयी।

फिर हुआ होगा कुछ ऐसा ,

होना था की जो न वैसा ,

माँ के आँखों के भी बादल ,

बरस गए होंगे फिर छल-छल।

13.ये मत सोचो रुक जाऊंगा

ये मत सोचो रुक जाऊंगा।

बेताब लहर के धक्कों से -

नौका चूर हो जाएगी,

नियति की वक्र नजर मुझपर -

माना की क्रूर हो जाएगी ,

तूफ़ां हठ ठान भले ही ले-

कर ले चाहे लाख जतन ,

जीवन यज्ञ आहुति में -

हो जाये मेरा सर्वस्व हवन,

पर जबतक धड़कन जिन्दा है-

ये मत सोचो झुक जाऊंगा।

ये मत सोचो रुक जाऊंगा।

ये मत सोचो रुक जाऊंगा।

पग-पग पर शूल मिलें चाहे-

राहों में तप्त अंगारे हों।

पावों में छाले पड़ जाएं या-

रोम-रोम प्यास के मारे हों।

मार्ग कठिन कितना कर लें -

मंजिल के जो हैं प्रहरी।

भाग्य रेखाएं भी रच लें -

खिलाफत में साजिश गहरी ,

पर जबतक साँस चुकी ना हो-

ये मत सोचो चूक जाऊंगा।

ये मत सोचो रुक जाऊंगा।

ये मत सोचो रुक जाऊंगा।

जो सपने मैंने पाल लिए-

अंतर-मन की आँखों में ,

भर हौसला उड़ चला जो-

बाजु की दो पाँखो में ,

तब मत सोचो थककर के-

पथ छोड़ अधूरा आउंगा,

या तो मंजिल मिल जाएगी-

या मृत्यु को गले लगाउंगा ,

यह मन में शंका मत पालो-

मैं नत होकर झुक जाऊंगा।

ये मत सोचो रुक जाऊंगा।

ये मत सोचो रुक जाऊंगा।

14.आवाहन(कविता)

अंगार भर लो लोचनों में, श्वांस में फुंफकार हो ,

नस-नस अनल से पूर्ण हो , पुरुष्त्व का संचार हो।

विश्वास जन का खोकर भी सत्तासीन हो जाते हैं।

जो हर चुनावी परिवेश में नए प्रपंच रचाते हैं।

वैसे दागी लोग न जाने क्यों हमारे नायक हैं ?

क्या वे लोग ही हमपर शासन करने लायक हैं ?

जैसे मृगेंद्र के पुत्रों पर भेड़ियों का बर्चस्व हो।

जैसे गर्दभ-दौड़ में कोई हारता सा अश्व हो।

वैसे ही आज अयोग्य हाथों में हमारा देश है।

फिर भी सुप्त पुरुषार्थ है,ये हमको क्लेश है।

भारती की अश्रुपूरित आंखों में ललकार है।

आज तुमसे शांति बदले युद्ध की दरकार है।

पुण्य-पथ जाता नहीं सुमनों के कोमल बाग से।

जूझना पड़ता उसे पौरुष की भीषण आग से।

हो दग्ध, सत्ताधीशों के असह्य प्रपञ्च-कपट से।

जलती है जब-जब प्रजा भयंकर-लोभ लपट से।

तब अंतर की ज्वाला ही उद्विग्न हो भड़कती है।

मन के अम्बर में आक्रोश दामिनी कड़कती है।

जो सुप्त शोलों पर मरुत अन्याय की चलने लगे।

क्यों न फिर न्यायार्थ पावक प्रचंड हो जलने लगे।

मिट्टी के घरों से तब-तब विकट प्रभंजन उठते हैं।

कोटि कलयुग देव होकर त्रस्त जब-जब रूठते हैं।

वह समय द्वार पर खड़ा हुआ, सत्कार करो।

अब त्राहि-त्राहि चीत्कार छोड़, हुंकार भरो।

तुम अग्निपुत्र हो, याचक कैसे हो सकते हो ?

अमित पराक्रमी होकर कैसे रो सकते हो ?

अब भी दृगों को मीचकर जड़वत रहोगे तुम अगर।

अब भी विवश वाचाल बनकर नत रहोगे तूम अगर।

तो जानलो यह राष्ट्र जिसपर गर्व है अभिमान है।

हो श्रीहत डूब जायेगा दीपित जो यह दिनमान है।

15.ऐ जाने वाले पल कह दे,

उम्मीदें बहुत हैं, आने वाले कल से।

ऐ जाने वाले पल कह दे,

इस आने वाले पल से।

यह वर्ष भला हो मधुमय हो,

सत्पथ की राह पे तन्मय हो,

यह खुशियों का उजियाला लाये ,

यह शांति-प्रेम का भाव सिखाये ,

इस वर्ष खड़ें हों हटकर ,

कपट-द्वेष से, छल से।

ऐ जाने वाले पल कह दे, .

इस आने वाले पल से।

यह साल नए कुछ घाव न दे ,

असमय-अनुचित वर्ताव न दे ,

इस साल कोई अवसाद न हो ,

किसी से कुछ दुर्वाद न हो,

यह साल विलग कर दे हमको ,

पापों के टिड्डे-दल से।

ऐ जाने वाले पल कह दे,

इस आने वाले पल से।

हम नभ से धीर-गंभीर बनें ,

हम लक्ष्य भेदते तीर बनें ,

हम प्रखर तेजस्वी सूर्य बनें ,

हम रण के बजते तुर्य्य बनें ,

परिपूर्ण रहें सदा हीं ,

अमित तेज से बल से।

ऐ जाने वाले पल कह दे,

इस आने वाले पल से।

16.आज फिर दर्द छलका

आज फिर दर्द छलका।

आँख फिर आज रोयी।

प्रिये, दिल ने फिर से-

स्मृतियाँ संजोई।

शिशिर रात में वह-

प्रणय के मधुर क्षण।

चांदनी की चादर पर -

हम और तुहिन-कण।

नर्म लबों पर-

पीयूष सा वो पानी।

हौले हवा में -

वो घुलती जवानी।

पल पास हैं सब-

तुम हीं हो खोयी।

आज फिर दर्द छलका।

आँख फिर आज रोयी।

शलभ बन जला मैं,

शिखा प्यार की थी।

बात इच्छाओं के,

बस सत्कार की थी।

जुदा मोड़ पर ,

आज दोनों खड़े हैं।

गम के कड़े शूल ,

दिल में गड़े हैं।

आँसू से तुमने-

भी आँखे भिगोई।

आज फिर दर्द छलका।

आँख फिर आज रोयी।

17.भारत-शब्दचित्र

लोकतंत्र-शोकतंत्र-जनतंत्र-भजनतंत्र।

जन को दुत्कार-सत्ता से प्यार।

प्रजातंत्र में उगते राजकुमार।

विदेश की रानी, भाषण का नरेश।

समता के वादे, भय का परिवेश।

राजनीती-ताजनीति।

कूटनीति-झुठनीति।

प्रतिबद्धता-आबद्धता।

दिखावे की संबद्धता।

कुविचार-भ्रष्टाचार।

बेईमानों की सरकार।

वादे वादे और वादे।

कोष लूटने के इरादे।

भूख-बेरोजगारी।

पीड़ा-लाचारी।

दंश-बीमारी।

प्रजा-बिचारी।

स्त्री-असुरक्षा।

गौ की रक्षा।

समाज-गंदे।

डर के धंधे।

टूटी-सड़कें

कृषक-कड़के।

बच्चे-कुपोषण।

सरकारी-शोषण।

जलते-झंडे।

चुनावी-फंडे।

न्याय में देरी।

ब्यवस्था-अँधेरी।

देश विरोधी नारे।

वाह युवा हमारे !

कविता-विचित्र।

भारत-शब्दचित्र।

इसको बदलना होगा।

नया राह चलना होगा

पुराना गौरव पाएंगे।

विश्व को दिखलायेंगे।

शौर्य चन्द्रगुप्त का।

तान समुद्रगुप्त का।

चाणक्य के ज्ञान को।

मगध के अभिमान को।

पृथ्वीराज का गर्व।

सिकंदर-विजय पर्व।

गंगा का पानी।

केसरिया जवानी।

मेवाड़ी-आन।

दक्षिण की शान।

राणा की तलवार।

शिवाजी का प्रहार।

लिच्छवि का राजतंत्र।

पतंजलि का योगमंत्र।

केसर कश्मीर वाला।

वाणी कबीर वाला।

भामाशाह सा विश्वासी।

विवेकानंद सा सन्यासी।

कालिदास सी कल्पना।

भीष्म सी संकल्पना।

रामराज्य सा आनंद।

आपसी प्रेम सम्बन्ध।

सब फिर से पाना है।

नूतन देश बनाना है।

मेरी तो यह जिद्द है।

सबसे यहीं उम्मीद है।

अंत में सबको प्यार।

राम-राम और नमस्कार।

18.क्या यहीं भारत का भाग्य है ?

विच्छुरित है अन्नदाता का सपना।

तृषित रक्त के नेता अपना।

.

माँ भारती के सेवा-कर्ता ,

आज भूख से पोषित हैं।

पैदावार देकर भी ,

रक्तरंजित और शोषित हैं।

.

तपोनिष्ठ इतिहास का ,

क्या यहीं त्याग है?

क्या यहीं भारत का भाग्य है ?

क्या यहीं भारत का भाग्य है ?

सुधार-विकास के नारों से।

अंधभक्ति या अंधप्रचारों से।

.

साथ पर्व मनाने वाले,

कट्टरता पर तूल गए।

गंगा-जमुनी तहज़ीब वाले ,

सौहार्दता को भूल गए।

.

पथभ्रष्ट युवाशक्ति क्या,

भारती का सौभाग्य है?

क्या यहीं भारत का भाग्य है ?

क्या यहीं भारत का भाग्य है ?

19.हाँ, तुमने प्यार सिखाया था

हाँ, तुमने प्यार सिखाया था।

सूखे तटबंधों को तुमने ,

प्रेम सलिल से सिंचित करके ,

वैरागी बंजर अंतर में ,

आसक्ति के अंकुर बोकर ,

तुमने प्रीत जगाया था ,

हाँ, तुमने प्यार सिखाया था।

जीवन के भूसर रंगों को ,

प्रेम वर्ण से हरित रंजित कर ,

अनल जलन से पीड़ित को ,

हिमानिल सा तन-मन छू-छूकर ,

तुमने प्रीत जगाया था ,

हाँ, तुमने प्यार सिखाया था।

चिर तृषार्त कोरे ह्रदय को ,

मधु-द्राक्षासव पान कराकर ,

रस-वंचित सूखे नीड़ ऊपर,

नव-कुसुम की कली खिलाकर ,

तुमने प्रीत जगाया था ,

हाँ, तुमने प्यार सिखाया था।

20.माँ मै तेरे दामन में फिर लौट आऊंगा

आज निकला हूँ उड़ने की ख़्वाहिश लिये ,

पर दुनिया के आसमान में कहाँ तक जाऊंगा ,

माँ मै तेरे दामन में फिर लौट आऊंगा।

दूर आँचल से तेरे तलाशता हूँ जो ,

कुछ साथी ,कुछ सपने,कुछ अपने ,

हो सकता है मिल जाये मंज़िल मेरी ,

पर स्नेहमयी बातों का सुख कहाँ पाऊँगा ,

माँ मै तेरे दामन में फिर लौट आऊंगा।

मुझे पता है समेट लोगी अंतर में अपने ,

भूल शैतानियाँ मेरी, भूल नादानियाँ मेरी ,

जीवन के हर पल हर गलती पर क्षमादान ,

भला तेरे हृदय को छोड़ कहाँ पाऊँगा ,

माँ मै तेरे दामन में फिर लौट आऊंगा।

कुछ धुंधलका सा याद है मुझको ,

मेरा रोना रातभर , तेरा जगना रातभर ,

तू सलामत रहे मैं रहूं ना रहूं ,

ऐसा विश्वास रिश्तों में कहाँ पाउँगा ,

माँ मै तेरे दामन में फिर लौट आऊंगा।

21.हाय प्रणय का प्रथम वियोग

हाय प्रणय का प्रथम वियोग।

स्पंदित हृदय की करुण वेदना,

द्रवित नयन और अनुपम रोग।

हाय प्रणय का प्रथम वियोग।

लुटे लुटे से चितवन अपने ,

ब्यथा ग्रसित सुखदायी सपने ,

पहचान यहीं अब बन रह जाते ,

आँख के आँसू सब कह जाते,

यादों के पल दर्द का मौसम,

रग रग में घुलता सा इक गम,

माँ के हांथ का रुचिकर खाना,

खाकर तिक्त सा मुख बन जाना,

अपनों से मिलने से डरना,

छुपकर ठंढी आहें भरना ,

बार-बार गलियों का चक्कर,

जिन गलियों में रूककर अक्सर,

मुझसे वो बातें करती थी,

नयनों में सपने भरती थी,

सहज हास और प्यारे लब थे,

जो की मेरे सब हीं सब थे,

छूता था तब शरमाती थी,

ख़ुद में सीमट-सीमट जाती थी,

मुझसे मोहब्बत करती थी वो,

पर दुनिया से डरती थी वो ,

मैं भी शायद कुछ कम ना था,

मुझमें भी तो वह दम ना था ,

तोड़ के जातिगत बंधन को,

कथीत समाजिक इन अंधन को,

दे ना पाया समुचित उत्तर,

उस पल को हो गया निरुत्तर ,

थाम कलाई मैं गर लेता,

हाय ज़माना क्या कर लेता,

शायद कुछ दिन बातें होतीं ,

फिर तो मधुमय रातें होतीं,

हाय वे दिन लुप्त हुवे अब,

रह गए केवल शुन्य संयोग।

हाय प्रणय का प्रथम वियोग।

22.जनता(ब्यथा और प्रण)

अन्तर्वेदना से छिन्न-भिन्न

आक्रांत उर की मर्म कराहें ,

अश्रुनिमग्न कातर स्वर में

पूछती हैं किसको पुकारें |

आह भारत-वर्ष हाय

क्या यहीं रह गया है शेष ?

स्वर्णयुक्त इतिहास का-

कुछ ,रहा नहीं भग्न-अवशेष ?

क्यों नहीं कुक्षि तेरी

अब कोई अशोक जन्माती है ?

क्यों नहीं स्वसम्मान की

आज ललकारें लहलहाती हैं ?

जनता कोई खिलौना है-

क्या, गणतंत्रता की सत्ता में ?

नहीं तो फिर गौण-

क्यों ,बन गयी है महत्ता में ?

रे जागो जनतंत्र के-

प्रहरी, उर्जस्वित-मतवालों ,

रे हिमगिरि सदृश्य-

मसृण, माँ भारती के लालों |

निकलो, मैले वस्त्रों को

धारण कवच सा कर कर के ,

बढ़ चलो राजपथ पर-

तुम, अपना स्वर मुखर कर के |

हाँ एक प्रश्न होगा

शायद, कुढ़ता तुम्हारे जिय में ,

करें विद्रोह किसका

यहाँ? सब नेता हैं जनप्रिय के |

तो शमशीर नहीं उठाना

है, बस प्रश्न मुखर करना है |

देशहित के कर्तब्य-भान

का, तुम्हें ज्योति प्रखर करना है |

प्रण करो तुम आज

हम भारत को स्वर्णतरू बना देंगे ,

कल के विश्वगुरु को फिर,

हम कल का विश्वगुरु बना देंगे |

23.प्रेयसी के संग कल्पना के पल

आओ सुनाता हूँ तुम्हें एक कहानी,

वो जो है मेरे सपनों की रानी,

मदमस्त अल्हड़ नवयौवना है,

बस इतना जानो वो मेरी कल्पना है|

जी करता है बन के मैं पायल,

नाचूँ प्यारी के साथ सुधि विसरा के,

बन के लाली उसके होठों पे छा जाऊं मैं,

या बन काजल बसूँ उसके आँखों में जाके|

सरसो के पीले खेतों में वो ,

ले अंगड़ाई और मै उसको निहारूं,

थोड़ा शरमा के देखे थोड़ा मुस्कुराए ,

वो मुझपे और मै उसपे वारी जाऊं |

नदी का किनारा हो और उसका साथ हो,

मेरे हाथों में... उसका हाथ हो ,

वो लेटे और गोद मेरी हो ,

शाम होने में बस थोड़ी सी देरी हो |

उसमे हया का नाज़ुक सा अंदाज़ हो ,

थोड़ा सन्नाटा हो थोड़े अल्फ़ाज़ हों ,

उसके गालों को नरमी से सहलाऊँ मैं,

आगे और थोड़ी गुस्ताख़ी कर जाऊं मैं |

होंठों से होंठों का स्पर्श होगा ,

अहा कितना मदमस्त वो रस होगा ,

मेरे बालों में होगी उसकी नाज़ुक कलाई ,

गगन में अब चाँदनी निकल आई |

वो बोलेगी छोडो अब रात होगी ,

आज जाने दो कल फिर मुलाक़ात होगी ,

फिर मचलकर मेरे सीने से लिपट जाएगी वो ,

बनकर गुड़िया बाँहों में सिमट जाएगी वो |

अब पगडंडियों पर वो मुझसे दूर जा रही है ,

लेकर मेरा चैनों-सुकून जा रही है ,

ऑंखें दूर तलक देखतीं है उसकी तलाश में ,

फिर मै भी घर चल पड़ता हूँ कल मिलने की आस में |

24.पिघलता मुखौटा

ऋतू परिवर्तन हो चूका है ,

धकेल ठंढ की रजाइयों को ,

लेकर लू की सौगात ,

ग्रीष्म अपने उफान की ओर,

कदम दर कदम बढ़ाते हुए ,

पिघला रहा है दुनिया का मुखौटा ,

डिग्री डिग्री पारा चढ़ाते हुए ,

जो बेबस थे कल तक अर्धनग्न ,

ठिठुरती ठंढी थपेड़ों से,

वो फिर बेबस है बेघर है ,

लू की गर्म चपेटों से ,

ओवरब्रिज के खम्भों की ओट में ,

गर्म आँधियो से बचने के लिए ,

मजबूर वो निस्तेज आँखों वाला बच्चा ,

क्या सोचता होगा जब ,

बगल से गुजरते कुछ हम उम्र कहते है,

कितनी अच्छी गर्मी है हम शिमला जाने वाले है.

उसे तो न ठंढ न ग्रीष्म न बरसात,

दो टुकड़े रोटी के सिवा कुछ मजा नहीं देता ,

काश मौसम परिवर्तन के साथ,

ह्रदय परिवर्तन भी होता |

25.रानी सारन्धा (भाग -1)

अँधेरी रात थी पंक्षी चहककर निर्वाणो मे सुप्त थे।

पर बुन्देल की दो नारियों के नयन निंद्रा मुक्त थे।

अनिरुद्ध रानी शीतला के मांग सुहाग की लाली।

सारन्धा थी उस योद्धा की भोली बहन मतवाली।

था वक्त जब योद्धाओं को बाहुबल की आन थी।

रणक्षेत्र की शौर्यगाथाएं उनकी प्रखर पहचान थी।

तब युद्धभूमि से जीतकर हीं आना था तो आते थे।

वरना मस्तक रणदेवी को हँसते हंसते चढ़ाते थे।

अनिरुद्ध था बुंदेलों की आँखों का चमकता तारा।

दोस्तों का परम दोस्त दुश्मन का निर्मम हत्यारा।

ब्याह रानी शीतला को जब से महल मे लाया था।

एक दिन भी प्रणयलिप्त हो समय नही बिताया था।

ऐसा नहीं उसके ह्रदय मे प्रेमरस का प्रवाह नहीं।

ऐसा नही उस योद्धा को प्रिया मिलन की चाह नहीं।

पर वतन अशांत हो जब जब पुकारा करता है।

वीर कहाँ तब रंग रास में समय गुजारा करता है।

कितनी बार कहा शीतला ने युद्ध त्याग दो प्यारे।

मैं अरण्य मे रह लुंगी हँस के साथ तुम्हारे।

तुमसे बिछड़ कर जीना अब मुझको ना भाता है।

तुम रहते हो रण मे ,मेरा ह्रदय जलता जाता है।

पर जिनका भाग्य हीं हो लिखा गया तलवार से।

वो कहां विंध सकते हैं नशीले नयन के वार से।

उस रात भी अनिरुद्ध अपने दुर्ग से दूर था।

तभी रानी शीतला का चिंतित ह्रदयमयुर था।

पलंग पर लेटी शीतला थी नींद उसे ना आया।

सारन्धा ने मधुर कंठ से गीत विरह का गाया।

तुनककर बोली शीतला क्या नींद तुम्हे ना आती है।

एक तो मुझको नींद नही ,ऊपर से तू जलाती है।

सारन्धा बोली नींद कहाँ आएगी तुमको भाभी।

जो भैया लेकर गए हुए हैं तेरी नयन की चाभी।

इतने मे दुर्ग कपाट खुला अनिरुद्ध अंदर आया।

लाल मुख हथियार विहीन निस्तेज नयन में छाया।

स्तब्ध रानी क्या कहती सारन्धा ने हीं पूछा।

कर दिया भैया तूने मस्तक सबका ऊंचा ?

वीरगति जब सबने पाई तू जिन्दा क्यों आया।

क्या हमारे इतिहास ने हमको यहीं सिखाया ?

अनिरुद्ध ने कहा बहन तूने आँख है खोला।

अपने भई के जमीर को सही वक्त पर तोला।

अब जाता हूं बन विजेता तेरे पास मै आऊंगा।

या रण मे हाहाकार मचाकर वीरगति को पाउँगा।

अनिरुद्ध तो चला गया शीतला हतप्रभ रह गयी।

ये सारन्धा मेरे पिया से जाने क्या क्या कह गयी।

फूट पड़ा शीतला के कोप का बंद पड़ा था सोता।

चोली मे छिपा के रखती गर तेरा पति जो होता।

स्वाभिमान से ओत-प्रोत सारन्धा फुंफकारी।

अबतक चल गयी होती उसपर मेरी कटारी।

शीतला बोली देखूंगी,अरे तेरा ब्याह भी होगा।

सारन्धा को आन के आगे प्रियपरवाह न होगा।

महरौनी को जीतकर था अनिरुद्ध वापस आया।

सारन्धा का चम्पतराय संघ उसने संबंध रचाया।

समय दूरियां तय कर गया धीरे धीरे मीलों में।

पर वह कांटा चुभा रहा दोनो नारी दिलों में।

26.क्या कभी अरमानो को, सीने में कुचला है आपने ?

जब मन उड़ता रहे आकाश में ,

जब उमंग हो हर साँस में ,

जब दिल मल्हार गाता रहे ,

जब स्वप्न पटल पर छाता रहे ,

क्या जज्बातों को तब , पैरों तले मसला है आपने ?

क्या कभी अरमानो को, सीने में कुचला है आपने ?

प्रजा के ब्यङ्ग बाणों से आहत ,

कुचल स्वामी के संग की चाहत ,

जैसे राजरानी बन को चले ,

जैसे श्रीराम को मर्यादा छले ,

क्या कभी खुद को खुद से, वैसे हीं छला है आपने ?

क्या कभी अरमानो को ,सीने में कुचला है आपने ?

मुरली की मीठी तान थी वो ,

दिल की प्यारी अरमान थी वो,

पर अश्रु सिवा वो क्या पायी ,

ब्रज छोड़ गए श्रीकृष्ण कन्हाई ,

प्यार में राधा सा टूटकर,फिर से सम्भला है आपने?

क्या कभी अरमानो को ,सीने में कुचला है आपने ?

क्या उर्मिल सा तड़पकर जिया आपने ?

क्या मीरा सा विष कभी पिया आपने ?

क्या चकोर सा नयनसुख पाया है कभी ?

क्या दिल बेमुरौव्त से लगाया है कभी?

क्या परवाने सा नासमझ बन, बार-बार है जला आपने?

क्या कभी अरमानो को ,सीने में कुचला है आपने ?

27.अरे पगली

अरे पगली तुझसे मोहब्बत करता हूं मैं|

लौट के आज न बहो में , तड़पती है क्यूँ|

अब रूठ के मुझसे ,सताती है क्यूँ |

पहले मेरे उदासी पर रो देती थी तू,

आज मुह फेर के मुझको रुलाती है क्यूँ |

आज भी तुझे खोने से डरता हूं मैं |

अरे पगली तुझसे मोहब्बत करता हूं मैं|

मेरी शैतानी भरी बातों पर मुझको डाँटेगा कौन,

अपना सुख दुःख मेरे साथ बांटेगा कौन,

गम के झंझावातो में किसके पास जाऊंगा मैं,

ख़ुशी में भर बांहो में किसे उठाऊंगा मैं,

मैं फिर वो भोली सी गुड़िया कहाँ से लाऊंगा,

वो मासूमियत भरा चेहरा फिर कहाँ पाउँगा ,

रात को २ बजे फोन पर तंग करेगा कौन,

हर बात पे मुस्कुरा कर पागल कहेगा कौन,

सोच कर इन बातों को रो पड़ता हूं मैं |

अरे पगली तुझसे मोहब्बत करता हूं मैं|

इतने अपनापन से मुझपर हक़ जतायेगा कौन,

मेरे लिए ज्येठ में छत पर आएगा कौन ,

बड़ी आँखों में आंसू भर कौन डराएगा अब,

मेरी बेकार बातों पर कौन मुस्कराएगा अब ,

रूठ कर भी कौन बोलेगा अपना ख्याल रखना,

कैसे पूरा होगा तेरे साथ देखा हर सपना ,

मानता हूं गलती हुई तो क्या मारने का इरादा है,

तू कह दे एक बार मर जाऊंगा ये वादा है,

पर अपने जुल्फों की छाँव देदे जलता हूँ मैं |

अरे पगली तुझसे मोहब्बत करता हूं मैं|

फिछे से ढक लेना मेरी आँखों को अपने हाथों से,

दिल को गुदगुदाना अपनी प्यारी प्यारी बातों से ,

कैसे भूल गयी वो लम्हे जो साथ साथ बिताये थे ,

याद नहीं वो जीवन के गीत जो साथ मिल के गये थे?

चल भूल जा सारे गीले शिक़वे गले से लागले,

आ फिर साथ साथ थोड़ा मिल के मुस्कुरा लें ,

जो चुभा है दिल में कंही कांटा निकाल देते है अब,

फिर से एक दूसरे की बांहो में बांहे डाल देते है अब,

अकेले जिया नहीं जाता तेरे लिए ठहरता हूं मैं |

अरे पगली तुझसे मोहब्बत करता हूं मैं|

28.ना जाने दिल क्यों खोजता है...

ना जाने दिल क्यों खोजता है|

वो खुशबु तेरे बालों की,

वो लाली तेरे गालों की,

दृग कजरारे तेज कटार से ,

लब पगे है जो रसधार से,

चंचल मीठी मुस्कान को ,

ज्यो साधु खोजे भगवन को ,

तुम ईष्ट हो या प्रेयसी,

मन दो पल रुक से सोचता है|

ना जाने दिल क्यों खोजता है|

वो लम्हे कितने प्यारे थे,

आप जो साथ हमारे थे,

थोड़ी बहुत ख़ामोशी थी,

बस पत्तों की सरगोशी थी,

जब सांसे अपनी टकराती थी,

क्या अदा से तुम शर्माती थी,

तब मस्त हो बरसा था सावन ,

हो उन्मुक्त हंसा था जैसे गगन ,

हंस के खिले थे बसंती फूल ,

मखमल जैसे बन गए थे शूल ,

जाने पतझड़ फिर क्यों आया,

मन दो पल रूक ये सोचता है|

ना जाने दिल क्यों खोजता है|

क्यूँ लम्हे ना थम जाते हैं?

क्यूँ वापस लौट ना आते हैं?

क्यूँ खोता है प्यार यहाँ ?

क्यूँ लुटता है संसार यहाँ?

क्यूँ दर्द दिलों में होता है ?

क्यूँ कोई अपना खोता है ?

क्यूँ रूह दीवानी हो जाये ?

क्यूँ साँस बेगानी हो जाये?

क्यूँ पागल दिल मचलता है?

क्यूँ अधूरापन सा खलता है?

तुम छोड़ मुझे क्यों चली गयीं?

मन दो पल रुक से सोचता है |

ना जाने दिल क्यों खोजता है|

ना जाने दिल क्यों खोजता है...

29.मगर संभव नहीं है येतुझे आवाज दूँगा मैं

मैं लिपट के रो लूंगा

तेरे यादों के साये से,

मगर संभव नहीं है ये

तुझे आवाज दूँगा मैं ||

मोहब्बत का प्रणय आग्रह,

प्रथम दिल से किया मैंने|

तेरे हर नाजों नखरों को,

पलकों पे लिया मैंने।

आज भी मुस्करा के तु कभी-

जो हाँ अगर कह दे |

तेरे हर एक गीतों को,

हँसकर साज दूँगा मैं ||

मगर संभव नहीं है ये

तुझे आवाज दूँगा मैं ||

जो दुख भरा ये गीत,

मेरे लब पे आया है।

एक एक हर्फ कहता है,

ये दिल चोट खाया है।

जिवन के किसी भी मोड पे-

जो मिल गयी फिर तु।

अपने सारे अश्कों का,

तुझे हिंसाब दूँगा मैं।।

मगर संभव नहीं है ये

तुझे आवाज दूँगा मैं ||

दिल तोड जाने क्यूं,

तु खुशहाल हँसकर है।

मेरे आँखों के कतरों मे,

तडपता मन का लश्कर है।

छोडो इश्क की गलीयों के-

पेंचिदे से रस्तों को।

तु सिधे कत्ल कर दे तो,

ना नाराज हूँगा मैं ||

मगर संभव नहीं है ये

तुझे आवाज दूँगा मैं ||

ईतर इन गम के चोटों से,

जिसे मैं रोज सहता हूँ।

गुरूर तुझमे है गर तो,

टशन मे मैं भी रहता हूँ।

अगर आबाद हो जाओगी -

तुम मुझसे बिछड कर के |

तो बर्बाद होकर भी,

कोइ सरताज हूँगा मैं ॥

मगर संभव नहीं है ये

तुझे आवाज दूँगा मैं ||

30.ऐ निर्मोही जल तु सुन

ऐ निर्मोही जल तु सुन

क्यों ना बरसे इन खेतों में।

जो सूखे कब से देख रहे

तेरी बाट बदली श्वेतों में।

दुःखित ह्दय पर निःशब्द

खामोश फसल मुरझाई सी।

दैन्य जडीत मुख सी लटकी

या वैध्व्य की परछांइ सी।

हैं आस मे तेरी सूख रहे

किसी विरहणी की भाँति।

जिसके प्रियतम ने भेजी हो

ना आने की फिर पाति।

केवल बन के दुःख द्रष्टा

क्यूं किसी कृषक का तोडे।

सपना बेटी के परीणय का

जो देख रहा दिन दिन जोडे।

कर्जदार रोता सा बोले

ऐ जल ना बन इतना गंदा।

कि तेरे कारण कोइ झुले

डाल गले में फाँसी फंदा।

आर्द ह्दय की सुनो पुकार

बहना इन आँखो से छोड।

बरस तु बदली से कुछ ऐसे

कि छा जा तटबंधों को तोड।

नहीं तो आँसू बरसेंगे अब

नमित नयनों के कोरों से।

श्रवण शक्ति चूक जाएगी

करूण क्रंदन के शोरों से।

जो तुम कुचल रहे हो आज

किसी वर्षाश्रीत के अंतर को।

तो क्या समेट तुम पाओगे

उसके पिडीत समंदर को।

पेंड की डाली सूख जाएगी

गीर जाएँगे झडकर प्रसून।

ना तडपा अब तो बरस जा

ऐ निर्मोही जल तु सुन।

31.तुमको मेरा उर पुकारे

तुम्हारे मन मे जो अनुराग था मेरा,

तुम्हारे अधरों पे जो राग था मेरा,

वो समर्पण तेरे अंतर का झुठा,

थे झुठे अश्रु तुम्हारे।

पर लौट के आजा प्रिये

तुमको मेरा उर पुकारे-2

सुमधुर सरस सलील वो बातें,

मीठे निदों की स्वपनिल वो रातें,

सम्मोहन तेरे नौनों का झुठा,

थे झुठे वो ख्वाब सारे।

पर लौट के आजा प्रिये

तुमको मेरा उर पुकारे-2

अधरों से अधरों का चुंबन,

प्रेमवस तेरा अालींगन,

धवल चेहरे की मासुमीयत झुठी,

थे झुठे वो वादे प्यारे।

पर लौट के आजा प्रिये

तुमको मेरा उर पुकारे-2

तुम बसंत की कुशुम कली थीं,

हो मदमस्त हँस के खिली थीं,

पर तेरी वो मुस्कान झुठी,

थे झुठे तेरे नजारे।

पर लौट के आजा प्रिये

तुमको मेरा उर पुकारे-2

कसम जो प्रेम गंगा में लिया था,

मेरे नाम का जो श्रृंगार किया था,

तेरा वो संवरना था झुठा,

थे झुठे तेरे इसारे।

पर लौट के आजा प्रिये

तुमको मेरा उर पुकारे-2

जब थी झुठी शैतानीयाँ तेरी,

जब झुठी थी नादानीयाँ तेरी,

जब झुठा हुआ हँसना मुस्कुराना,

तो सच्चे क्यों हुए झगडे सारे।

पर लौट के आजा प्रिये

तुमको मेरा उर पुकारे-2